किस्से कहानियों का संग

फोटो– पुरुषोत्तम

ऐसे समय में जब स्कूल बंद थे तब ऑनलाईन कक्षाओं में जिन बच्चों के साथ विभिन्न कारणों से कुछ कम काम हो पाया या नहीं हो पाया वहां बाल साहित्य ने सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया ने थोड़ी बहुत भरपाई की।

– अनुपमा तिवाड़ी

हाल ही में कोरोना– 19 के चलते हमारे जीवन में पहली बार ऐसा हुआ कि रेल, हवाई जहाज, कोट्र्स, स्कूल और कॉलेज सब बंद हो गए। ऐसे में बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया गया। ऑनलाइन शिक्षण कार्य की जो सीमायें हैं उनसे भी हम सभी भली–भांति परिचित हैं। ऐसे में कई जगहों पर कोविड गाइडलाईन की पालना करते हुए ऐसे प्रयास हुए जिनसे बच्चों का सीखना कुछ हद तक जारी रहा।

मैं अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, राजस्थान में हिंदी भाषा की संदर्भ व्यक्ति के रूप में कार्यरत हूँ। हम ग्रीष्मावकाश के दौरान और नियमित सत्र में शिक्षकों को विभिन्न स्तरों की कुछ–कुछ पुस्तकें देते रहे हैं जिनके सकारात्मक परिणाम भी सामने आते रहे हैं। कोविड–19 के दौरान जब विद्यालय बंद थे तब एक विद्यालय की शिक्षिका ने हमारे द्वारा दी गईं कुछ पुस्तकें बच्चों को घर पर पढ़ने के लिए दीं।

जब स्कूल खुले तब मैं उस स्कूल में गई जिसमें शिक्षिका ने बच्चों को स्कूल बंद होने के दौरान कुछ पुस्तकें घर पर पढ़ने के लिए दी थीं। शिक्षिका मुझे कक्षा सात में लेकर गईं और उन्होंने बच्चों से बात करनी शुरू की कि किस–किसने इस बंद के दौरान घर पर किताबें पढ़ी हैं और उसमें क्या–क्या पढ़ा? एक बार तो बच्चे कुछ चुप से हो गए फिर मैंने कहा कि जो भी पढ़ा, समझ में आया या याद है वो ही थोड़ा बहुत बता दो। एक बच्चे ने कहा मैडम मैंने दो भाइयों की हवाई जहाज बनाने वाली किताब पढ़ी। मैंने कहा राइट ब्रदर्स की? उसने कहा हाँ! फिर आगे उसने हवाई जहाज के बनाने की और उसके उड़ने की प्रक्रिया को अपने शब्दों में बताने का प्रयास किया।

एक–दूसरे बच्चे ने कहा कि उसने 'जलपक्षी' वाली किताब पढ़ी है। मैंने कहा उसमें क्या था? उसने कहा उसमें यह बात थी कि कुछ पक्षी जल में भी रहते हैं फिर

उसने दो–तीन जलपक्षियों के नाम बताए। मैंने कहा जलपक्षियों के बारे में तुम्हें पहले भी पता था क्या ? उसने कहा नहीं इस किताब से पता चला।

एक तीसरे बच्चे ने बताया कि उसने ले जाई गई किताब से देखकर (किताब दिखाते हुए) एक माला बनाई। उसने आगे कहा मेरी मम्मी ने पूछा कि तूने ये माला कहां से बनानी सीखी? उसने कहा इस किताब से देखकर। वह किताब पेपर कटिंग से विभिन्न प्रकार की सजावटी चीजें बनाने को ले कर थी। जिसमें माला जैसी चीजें बनाने के चरण नंबर डाल कर दिए हुए थे। एक अन्य बच्चे ने कहा कि वह जो किताब घर पर ले कर गया था उसे उसने अपनी दादी को भी पढ़कर सुनाया। उसकी दादी पढ़ना नहीं जानती हैं।

यूं तो पुस्तकालय से इस प्रकार का उपयोग हर समय ही किया जा सकता है लेकिन जिस समय स्कूल बंद थे उस समय भी बच्चों का सीखना जारी रहा। पुस्तकें देते समय मैंने शिक्षिका को कहा कि आप इन पुस्तकों को बच्चों को घर के लिए भी दे सकती हैं लेकिन उन्हें लगा कि बच्चे उन्हें हिफाज़त से नहीं रख पाएंगे और पुस्तकें फट जाएंगी। लेकिन जब बच्चे पुस्तकें घर लेकर जा रहे थे तब उन्होंने एक कॉपी में बच्चों से एंट्री करवाई। जिसमें कुछ कॉलम खींचकर क्रमांक, पुस्तक का नाम, पुस्तक का नंबर, पुस्तक ले जाने की तारीख, पुस्तक जमा करवाने की तारीख, पुस्तक प्राप्तकर्ता का नाम व हस्ताक्षर करवाने का काम किया गया। शिक्षिका ने देखा कि पुस्तकों की एंट्री करने और पुस्तकों के रख–रखाव का काम बच्चों ने बड़े ही करीने से किया था।

इन उदाहरणों को देखकर लगता है कि इनमें बच्चों का सीखना कुछ इस प्रकार हुआ –

पहली बात तो यह कि शिक्षिका अपने विद्यार्थियों पर यह विश्वास कर पाईं कि बच्चे जब कोई ज़िम्मेदारी लेते हैं तो वे उसका निर्वहन भी भली प्रकार से करते हैं। पहले उदाहरण में बच्चे ने हवाई जहाज बनाने की प्रक्रिया को समझने और फिर बताने का बेहतर प्रयास किया जिससे उसे उसके निर्माताओं और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी मिली। यहां वह भौतिक विज्ञान के कुछ नियमों को समझने का प्रयास भी करता दिखाई दिया क्योंकि वह बता रहा था कि कैसे करने पर हवाई जहाज ऊपर उठाने लगा होगा।

दूसरे उदाहरण में बच्चे को कुछ पक्षी जल में भी रहते हैं। वे क्या खाते हैं? जल में कैसे रहते हैं? आदि कई बातों की जानकारी मिली जो कि उसे पहले नहीं थी। तीसरे उदाहरण में बच्चे ने पहली बार पेपर कटिंग से स्टेप्स फॉलो करते हुए माला बनाई जिसमें उसे स्वयं निर्देशों का पालन करते हुए सीखने का अवसर मिला। ऐसे में जाहिर है कि माला के बना लेने पर उसे एक प्रकार की सफलता या जो वह चाहता था उसे प्राप्त करने का सुखद अहसास हुआ होगा। चौथे उदाहरण में बच्चे की दादी जो पढ़ना नहीं जानती थीं उन्हें भी लिखा हुआ सुनने का अवसर मिला और बच्चे को स्वयं पढ़ने/जानने के साथ अपनी दादी को लिखा हुआ सुनाने का आनंद मिला।

इन उदाहरणों में ऐसा सीखना था जो बच्चों में पढ़ने के प्रति लगाव पैदा कर रहा था, नया जानने, सीखने के प्रति उनमें उत्सुकता भर रहा था जिसकी कोई परीक्षा नहीं होनी थी। बच्चों ने उस दौरान पढ़ ली गई पुस्तकों की अदला–बदली भी की। जिससे वे अपने द्वारा इश्यू करवाई गई पुस्तक के अलावा दूसरी पुस्तकें भी पढ़ सकें। ऐसे समय में जब स्कूल बंद थे तब ऑनलाईन कक्षाओं में जिन बच्चों के साथ विभिन्न कारणों से कुछ कम काम हो पाया या नहीं हो पाया वहां पुस्तकों ने सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया ने थोड़ी बहुत भरपाई की।

उस दौरान हम भी घर से ही शिक्षक साथियों के साथ ऑनलाइन काम कर रहे थे। ऐसे में हमने (परिवार के सदस्यों) ने हमारे घर के पुस्तकालय को छानबीन कर बच्चों की पत्रिकाएं चकमक, प्लूटो, साईकिल, स्वयंप्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तकें, विजयदान देथा की पुस्तकें, सोपान जी की पुस्तक 'एक था मोहन', कमला भसीन की पुस्तक और लोककथाओं से कहानियां और कविताओं के ऑडियो बनाए और बच्चों तक पहुंचाए। जिससे बच्चे दूर बैठकर अपने घरों में साहित्य का आनंद ले पाए। उस दौरान मैंने बच्चों के लिए घर के पुस्तकालय से सर्वाधिक कविताओं और कहानियों के ऑडियो बनाए और उन्हें शिक्षकों के माध्यम से बच्चों तक पहुंचाया।

टोंक जिले के एक अन्य विद्यालय के एक शिक्षक ने समुदाय के एक युवा को कुछ पुस्तकें बच्चों को पढ़ने के लिए दीं। विद्यालय बंद होने पर बच्चे अपने समुदाय के उस युवक से पुस्तकें ले कर पढ़ते रहे। एक अन्य संस्था ने राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके में ऊंटगाड़ी को चलता–फिरता पुस्तकालय बनाकर बच्चों के बीच में बाल साहित्य पहुंचाया जिससे बच्चों का पुस्तकों से एक रिश्ता बना रहे।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टोंक, राजस्थान से जुड़ी हैं)